ISSN 0974-8857

तुलसी प्रज्ञा

TULSÍ PRAJÑÁ

वर्ष 43 • अंक 169-170 • जनवरी-जून, 2016

A Peer Reviewed Research Quarterly

जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ - 341 306 (राजस्थान) भारत
JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE

तुलसी प्रज्ञा

ISSN 0974-8857

TULSI PRAJÑĀ

A Peer Reviewed Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

YEAR-43 VOL.-169-170 JANUARY-JUNE, 2016

Patron

Prof. B.R. Dugar
Vice-Chancellor

Editor

Prof. Anil Dhar

Co-Editors

Dr. Samani Shashi Prajna
Samani Sulabh Prajna

Managing Editor

Nepal Chand Gang

Editorial-Board

Prof. Mahavir Raj Gelra, Jaipur
Prof. Satya Ranjan Banerjee, Kolkata
Prof. Arun Kumar Mookerjee, Kolkata
Prof. Dayanand Bhargava, Jaipur
Prof. Frank Van Den Bossche, Belgium
Prof. R.B.S. Verma, Ladnun
Prof. Damodar Shastri, Ladnun

Website : jvbi.ac.in, **E-mail :** tulsiprajnarj@gmail.com, anljvbi@gmail.com

Publisher :
Jain Vishva Bharati Institute
Ladnun-341306, Rajasthan, India

Subject	Author	Page No.
गीता का ज्ञानयोग	प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'	86-93
सूत्र स्वाध्याय का अधिकारी कौन?	मुनि मदन कुमार	94-99
गाँधी दर्शन में अहिंसा एवं शिक्षा के आयाम	डॉ. जुगल किशोर दाधीच	100-105
शांति स्थापना में वर्तमान शांति शिक्षा का योगदान	डॉ. रवीन्द्र सिंह राठौड़	106-110
उत्तराध्ययन सूत्र की कथाओं में निहित मानवीय संवेदना का प्रतिपादन	डॉ. वंदना मेहता	111-119
वनस्पतिकाय का शारीरिक उपकार	समणी ज्योतिप्रज्ञा	120-126
गाँधीवादी चिन्तन में नारी विकास	भारती कंवर	127-136

उत्तराध्ययन सूत्र की कथाओं में निहित मानवीय संवेदना का प्रतिपादन

डॉ. वंदना मेहता

मानव सृष्टि के प्रारम्भ से ही कथा प्रेमी रहा है। भारतीय साहित्य का अधिकांश भाग कथा साहित्य में गुंफित है। जिसमें एक से एक सुन्दर जीवन को बोध कराने वाली कथाएँ वर्णित हैं। इस साहित्य में जहां लोक-संस्कृति, लोक-जीवन, मानवीय मूल्य, मानव के कर्तव्य-अकर्तव्य के संबंध में स्पष्ट दिशाबोध प्राप्त होता है, वही ये कथाएं वर्तमान के समस्या-संकुल-मानव के लिए पथ-प्रदर्शक सिद्ध हो सकती हैं। कथा साहित्य में जैन कथा साहित्य का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। जैन कथा-साहित्य बहु-आयामी और व्यापक है। रूपक, आख्यान, संवाद, लघुकथाएं, एकांकी, नाटक, खण्डकाव्य, चरितकाव्य और महाकाव्य से लेकर वर्तमान कालीन उपन्यास शैली तक की सभी कथा-साहित्य की विधाएँ उसके अंतर्गत आ जाती हैं। जैन आगम ग्रंथों में मूलसूत्रों के अन्तर्गत कथा साहित्य की दृष्टि से अवलोकन किया जाये तो उसमें उत्तराध्ययनसूत्र का विशिष्ट स्थान है। इसमें शिक्षाप्रद, भावनात्मक एवं मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत अनेक कथाओं का समावेश है। उत्तराध्ययनसूत्र में मुख्य रूप से कपिल-मुनि कथानक, नमि राजर्षि कथानक, हरिकेशबल कथानक, चित्र-संभूत कथानक, इषुकारीय कथानक, संजय-राजर्षि कथानक, मृगापुत्र कथानक, समुद्रपालीय कथानक, रथनेमी कथानक, केशी-गौतम संवाद, जयघोष-विजयघोष कथानक प्राप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त भी कई दृष्टान्त कथाओं का समावेश भी इस आगम ग्रन्थ में उपलब्ध होता है।

इन उपरोक्त कथाओं का सूक्ष्मता से अध्ययन करने पर कपिल कथानक में संसार की असारता से संबंधित, नमिराजर्षि कथानक में अनासक्ति से संबंधित,